HISTORY, B.A. Hons II - PAPER II

EFFECTS OF THE REVOLUTIONS OF 1848
(1848 ई. की क्रांति के परिणाम)

इस क्रांति के काफी महत्वपूर्ण परिणाम हुए। इस क्रांति ने विश्व के लिए सुधारों का मार्ग खोल दिया। इस क्रांति के कुछ महत्वपूर्ण परिणाम निम्नलिखित हैं :-

1. निरंकुश शासन का अन्त :- इस क्रांति के फलस्वरूप समस्त यूरोप में वैधानिक शासन का विकास हुआ। निरंकुश शासन की नींव हिल गई। राष्ट्रीय एकता एवं संवैधानिक स्वतंत्रता के विचारों का भी विकास हुआ। डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, हॉलैण्ड, सार्डीनिया, फ्रांस आदि देशों में वैधानिक शासन की स्थापना हेतु जनआन्दोलन हुए और सफलता भी मिली।

2. सैन्यवाद का उदय :- इस क्रांति के बाद क्रांतिकारियों को यह विश्वास हो गया था कि उदार एवं जनतंत्रीय उपायों द्वारा उनका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पायेगा। अतः इसके लिए उन्होंने सैनिक उपायों को अपनाया। इटली और जर्मनी में सैनिकवादी उपायों का ही आश्रय लिया गया।

3. सामूहिक चेतना का विकास :- 1848 ई. की क्रांति से जन-समूह का महत्व भी प्रकाश में आया। 1848 से पहले के आन्दोलन व्यक्तिगत रूप से होते थे, लेकिन इसके बाद आंदोलन व्यक्तिगत के स्थान पर सामूहिक बन गये। अब राष्ट्रीय चेतना नेताओं तक सीमित न रहकर जनसमूह की चेतना बन गयी।

4. राष्ट्रीय आंदोलनों का विकास :- यद्यपि राष्ट्रीय आन्दोलन विफल रहा, इससे समस्त यूरोप में धीरे-धीरे राष्ट्रीय आंदोलन की जड़े जम गई। इस क्रांति ने उस मार्ग को खोज निकाला जिस पर चलकर जर्मनी और इटली का एकीकरण हुआ होना गया।

(क) फ्रांस पर प्रभाव :- लुई फिलिप के भागने के पश्चात फ्रांस में गणतंत्रवादी तथा समाजवादी दो सरकारों की स्थापना हुई। अंत में दोनों दलों के नेताओं ने आपस में समझौता करके एक अस्थाई सरकार की स्थापना की, लेकिन बाद में बेरोजगारों को रोजगार दिलाने की बात को लेकर दोनों दलों में संघर्ष हो गया। अंत में समाजवादी पराजित हुए और फ्रांस में द्वितीय गणतंत्र की घोषणा कर दी गयी।

लुई फिलीप के पतन के पश्चात् निर्वासित नेपोलियन तृतीय (नेपोलियन महान् का भतीजा) पुनः फ्रांस में आ गया और राष्ट्रपति चुनाव में इसे भारी सफलता मिली। विलसन के अनुसार, "1789 तथा 1848 में क्रांतिकारियों ने फ्रांस में जनतंत्र स्थापित करने के लिए क्रांति की थी, परन्तु परिस्थितिवश दोनों ही अवसरों पर नेपोलियन का साम्राज्य स्थापित हो गया।"

(ख) यूरोप के अन्य राज्यों पर प्रभाव :- 1848 ई. की फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव केवल फ्रांस तक ही सीमित नहीं रहा, वरन् इस क्रांति का प्रभाव सम्पूर्ण यूरोप पर पड़ा। यूरोप उस वर्ष छोटी-बड़ी कई क्रांतियाँ हुई

Ajanta Officer

(1) आस्ट्रिया की क्रांति :- आस्ट्रिया में पोल, चेक, मगिन, इटालियन, हंगेरियन, रूमानियन, स्लाव तथा जर्मन आदि अनेक जातियां रहती थीं। राष्ट्रवादियों के प्रचार के कारण ये जातियां काफी जागृत हो गयीं तथा ये स्वतंत्र होने के अवसर ढूंढने लगीं। 13 मार्च 1848 को वियना में विद्रोह हो गया। मेटरनिख भयभीत होकर इंगलैण्ड भाग गया। मेटरनिख की पराजय क्रांति की बहुत बड़ी सफलता थी। सेना तथा क्रांतिकारियों में भयंकर युद्ध हुआ। अंत में क्रांतिकारी पराजित हुए। राजा फर्डिनेण्ड पुनः आस्ट्रिया का सम्राट घोषित किया गया। इस प्रकार वियना की क्रांति असफल रही, लेकिन इस क्रांति से प्रतिक्रियावादी मेटरनिख का पतन हो गया।

(2) इटली :- मेटरनिख के पतन के पश्चात इटली के देशभक्तों के साहस में पर्याप्त वृद्धि हुई। 1848 ई. की क्रांति का समाचार पाकर वह विद्रोहाग्नि और भड़क उठी। मिलान, वेनिस, पर्मा, मोडेना, सार्डीनिया, टस्कनी और नेपल्स में विद्रोह होने लगे। इसी समय मेजिनी भी इस युद्ध हेतु इटली वापस आ गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि इटली अवश्य ही एक स्वतंत्र राष्ट्र बन जायेगा।

लेकिन अंत में यह क्रांति असफल हो गयी। सार्डीनिया के अतिरिक्त शेष सारी इटली की वही हालत हो गयी जो पहले थी। सार्डीनिया का राजा एल्बर्ट, बराबर युद्ध करता रहा, परन्तु आस्ट्रिया की सेना ने पराजित कर दिया। इसके पश्चात एल्बर्ट ने गद्दी अपने पुत्र इमानुएल को दे दी। इमानुएल ने आस्ट्रिया से संधि करने के लिए वार्ता आरम्भ की। विक्टर इमानुएल पर आस्ट्रिया के सम्राट ने यह दबाव डाला कि वह संविधान वापस ले ले, लेकिन इमानुएल ने साफ इन्कार कर दिया। फलस्वरूप इटली की समस्त जनता उसे अपना नेता मानने लगी।

(3) जर्मनी में क्रांति :- जर्मनी में अनेक राज्य थे जिनका शासन निरंकुश था। 1848 ई. की क्रांति का समाचार सुनकर जर्मन देशभक्तों का उत्साह दुगुना हो गया। सर्वप्रथम 13 मार्च 1848 ई. को प्रशा की राजधानी बर्लिन में क्रांति हो गयी। राजा ने क्रांतिकारियों की मांग स्वीकारते हुए संविधान सभा बुलाई। सभा ने लोकतांत्रिक आदर्शों के आधार पर एक संविधान सभा बनाया जो कुलीनों के विरोध के कारण देश में लागू नहीं किया गया। इसके पश्चात जर्मनी के अन्य राज्यों बेडेन, वर्टमबर्ग, बवेरिया, वेमार आदि में निरंकुश सरकारों के विरुद्ध आन्दोलन छिड़ गया। इस उदार आन्दोलन की तीन प्रमुख मांगें थीं - राजनीतिक अधिकार, प्रेस की स्वतंत्रता तथा संवैधानिक शासन।

अन्त में, ओल्मुग नामक स्थान पर संसद का अधिवेशन हुआ। जनता को एक उदार संविधान दिया गया। कुलीनों की प्रधानता के बावजूद भी आस्ट्रिया ने इसका विरोध किया। अतः संसद भी भंग हो गयी। फ्रेडरिक विलियम इससे इतना दुखी हुआ कि वह पागल हो गया। इस प्रकार 1848 ई. की क्रांति जर्मनी में भी असफल रही।

→

4. **इंग्लैण्ड पर प्रभाव:-** 1848 ई. की क्रांति के प्रभाव से इंग्लैण्ड भी न बच सका। इंग्लैण्ड में सन 1832 के अनुसार अधिनियम से मजदूर एवं कृषक वर्ग को कोई लाभ नहीं हुआ। 1836 ई. में एक चार्टर लीग की स्थापना की गयी। इन लोगों की प्रमुख मांगें थी कि संसद सदस्यों को वेतन दिया जाये व संसद का निर्वाचन प्रतिवर्ष हो, मतदान गुप्त व निर्वाचन क्षेत्र समान हो तथा संसद की सदस्यता के लिए सम्पत्ति योग्यता का अंत करके वयस्क पुरुषों को मताधिकार प्रदान किया जाये। सर्वप्रथम इन मांगों को लेकर 1839 में 10 हजार व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराकर एक चार्टर संसद में पेश किया गया जो अस्वीकार कर दिया गया। 1842 में 30 लाख व्यक्तियों का हस्ताक्षर वाला दूसरा चार्टर पेश किया गया, लेकिन यह भी अस्वीकार हो गया। 1848 को 5 लाख व्यक्तियों ने एक सभा की। इसके बाद चार्टर में हस्ताक्षर आंदोलन शुरू हुआ। लगभग 50-60 लाख लोगों के हस्ताक्षरों की तैयारी पूरी हुई। हस्ताक्षरों की जाँच करवाने पर अनेक हस्ताक्षर जाली सिद्ध हुए। इससे चार्टर बहुत बदनाम हुआ और आन्दोलन शिथिल पड़ गया।

5. **स्विट्ज़रलैण्ड पर प्रभाव:-** धार्मिक मतभेदों के कारण इस समय स्विट्ज़रलैण्ड में कैथोलिकों तथा प्रोटेस्टेंटों में भारी संघर्ष चल रहा था। वहां के देशभक्त धार्मिक मतभेदों के कारण देश के विभाजन को समृद्धि एवं सुरक्षा के लिए घातक समझते थे। 1848 ई. की क्रांति का समाचार सुनकर स्विट्ज़रलैण्ड में भी आन्दोलन हुए जिसके परिणामस्वरूप देश में उदार शासन की स्थापना हुई और नया संविधान बना।

6. **हॉलैण्ड पर प्रभाव:-** 1848 ई. की क्रांति का समाचार सुनकर हॉलैण्ड के उदारवादियों ने भी निरंकुश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। विवश होकर विलियम द्वितीय को वैध सत्ता स्वीकार करनी पड़ी और जनता को एक उदार संविधान देना पड़ा। एक नया मंत्रिमण्डल बनाया गया जो अपने कार्यों के प्रति व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी था। लेखन, भाषण, प्रेस तथा समाचार-पत्रों पर प्रतिबंध हटा दिये गये। इस प्रकार हॉलैण्ड में यह क्रांति हितकारी सिद्ध हुई।

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 1848 ई. क्रांति व्यापक होते हुए भी सच्चे रूप से जन-क्रांति नहीं बन सकी। अपने तात्कालिक उद्देश्य से असफल रहने पर भी इस क्रांति ने लोगों में नवीन दृष्टिकोण विचारधारा और चेतना का संचार अवश्य किया।

21.9.2020